CHAPTER 4, गूंगे
PAGE 51, अभ्यास

11:4:1: प्रश्न-अभ्यास:1

1. **गूँगे ने अपने स्वाभिमानी होने का परिचय किस प्रकार दिया?**

उत्तर- गूंगे ने अपने सीने पर हाथ रखकर संकेत किया कि उसने आज तक किसी के सम्मुख हाथ नहीं फैलाया है। उसने अपनी भुजाओं को दिखाया और संकेत किया कि उसने मेहनत करके खाया है। उसने पेट बजाकर बताया कि उसने यह सब अपने पेट के लिए किया है। इस प्रकार संकेतो से उसने बताया की वह स्वाभिमानी है

11:4:1: प्रश्न-अभ्यास:2

2. **'मनुष्य की करुणा की भावना उसके भीतर गूँगेपन की प्रतिच्छाया है।' कहानी के इस कथन को वर्तमान सामाजिक परिवेश के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- संवेदनशीलता मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। संवेदनशीलता के कारण मनुष्य में दूसरों के प्रति करुणा और प्रेम का भाव उत्पन्न होता है। वर्तमान समय में मनुष्य के

अंदर संवेदनशीलता ख़त्म होती जा रही है । संवेंदनशीलता की भावना मनुष्य के भीतर मूक अवस्था में रहती है. यदि कभी वह बहार आ भी जाती है तो मनुष्य के व्यव्हार में नहीं आ पाती है । इसलिए कवि ने कहा है कि मनुष्य की करुणा की भावना उसके भीतर गूंगेपन की प्रतिछाया के रूप में विद्यमान है ।

11:4:1: प्रश्न-अभ्यास:3

3. **'नाली का कीड़ा! 'एक छत उठाकर सिर पर रख दी' फिर भी मन नहीं भरा।'- चमेली का यह कथन किस संदर्भ में कहा गया है और इसके माध्यम से उसके किन मनोभावों का पता चलता है?**

उत्तर- चमेली ने दया करके गूंगे को अपने पास रख लिया था । गूंगे का स्वभाव था कि वह कुछ समय के लिए चला जाता था और फिर कुछ समय बाद वापस आ जाता था । एक दिन जब गूंगा फिर बिना बताये चला गया तब चमेली यह कथन कहती है । उसे लगता है कि गूंगा नाली के कीड़े **की तरह** है । उसे **चाहे** जितना भी बेहतर जीवन दे दो मगर वह गन्दगी को ही पसंद करता है । चमेली के इस कथन से पता चलता है कि वह गूंगे जैसे लोगों के प्रति क्या सोच रखती है । वह उस कीड़े के समान समझती है । उसे लगता है **उसने गूंगे को अपने यहां पे आश्रय**

देकर एहसान किया है जिसके बदले वह गूंगे को जो चाहे कह सकती है और उसके साथ कर सकती है ।

11:4:1: प्रश्न-अभ्यास:4

4. **यदि बसंता गूँगा होता तो आपकी दृष्टि में चमेली का व्यवहार उसके प्रति कैसा होता?**

उत्तर- यदि बसंता गूंगा होता तो हमारी दृष्टि में चमेली का व्यवहार इसके विपरीत होता । वह बसंता को मूक -बधिरों के विद्यालय में भेजती । उसे गली में नहीं छोड़ देती जहाँ लोग मारते । उसे सक्षम बनाने का प्रयास करती । वह प्रयत्नं करती की उसका बच्चा अन्य बच्चों के साथ घुल -मिलकर रहता तथा लोग उसे दया की दृष्टि से नहीं देखते ।

PAGE 52, अभ्यास

11:4:1: प्रश्न-अभ्यास:5

5. **'उसकी आँखों में पानी भरा था। जैसे उनमें एक शिकायत थी, पक्षपात के प्रति तिरस्कार था।' क्यों?**

उत्तर- गूंगा चमेली को माँ के समान ही समझने लगा था । आरम्भ में गूंगे को चमेली में करुणामयी माँ का रूप दिखा था । परन्तु चमेली के साथ रहते हुए उसे एहसास होने लगा की वह उसके लिए कुछ नहीं है । जब बसंता ने गूंगा पर चोरी का इलज़ाम लगाया,तो उसे उम्मीद थी कि चमेली उसका पक्ष लेगी । परन्तु इसके विपरीत चमेली ने अपने बेटे का पक्ष लिया । गूंगे को चमेली के इस व्यवहार ने दुखी ही नहीं किया बल्कि उसकी आँखों में पानी भी भर दिया । चमेली ने उसकी आँखों में अपने पक्षपातपूर्ण व्यवहार की शिकायत पढ़ ली थी । वह चमेली के पक्षपात भरे व्यवहार से आहत था और चमेली लिए उसमें तिरस्कार भी था।

11:4:1: प्रश्न-अभ्यास:6

6. **'गूँगा दया या सहानुभूति नहीं, अधिकार चाहता था'- सिद्ध कीजिए।**

उत्तर- गूंगे ने कई बार संकेत के माध्यम से बताया कि वह दया या सहानुभूति नहीं अधिकार चाहता था । अपनत्व से अधिकार उपजता है । चमेली उसे दया करके अपने पास रखती है परन्तु गूंगा उसे अपनत्व समझता है । वह चमेली से अधिकार चाहता है । चमेली द्वारा बसंता का पक्ष लेने के

पक्षपातपूर्ण व्यवहार के प्रति तिरस्कार गूंगे की आँखों में आँसू के रूप में स्पष्ट दिखाई दे जाता है। वह केवल अधिकार चाहता है जो उसे प्रेम मान-सम्मान तथा समानता का भाव देता है । दया या सहानुभूति उसे समानता का भाव नहीं देती है । इसलिए वह दया या सहानुभूति से दूर भागता है।

11:4:1: प्रश्न-अभ्यास:7

7. **'गूँगे' कहानी पढ़कर आपके मन में कौन से भाव उत्पन्न होते हैं और क्यों?**

उत्तर- गूंगे की कहानी पढ़ने के बाद उसके लिए सहानभूति उत्पन्न होती है । परन्तु वह सम्मान का पात्र है सहानुभूति का नहीं है। यदि उसे सही लोग तथा सही मार्गदर्शन मिलता तो अन्य लोगो की तरह उसका जीवन भी सामान्य होता । उसके जीवन में मौजूद लोगो के व्यव्हार के कारण वह सहानुभति का पात्र बन जाता है । गूंगा प्रतिदिन लड़ता है क्यूंकि समाज सम्मान का अधिकार नहीं देता है. कहानी के दृश्य उसे सहानभूति का पात्र बना देते है

11:4:1: प्रश्न-अभ्यास:8

8. **कहानी का शीर्षक 'गूँगे' है, जबकि कहानी में एक ही गूँगा पात्र है। इसके माध्यम से लेखक ने समाज की किस प्रवृत्ति की ओर संकेत किया है?**

उत्तर- लेखक के अनुसार आज समाज में गूंगे लोग उपेक्षित रहते है। दिव्यांग लोगो पर समाज द्‌वारा अत्याचार होता है परन्तु लोग देखते रहते है। सभी लोगो के मन में दिव्यांग लोगो के प्रति सहानभूति होती है । परन्तु समय आने पर वही लोग दिव्यांग लोगो शोषण करते है । ऐसे लोग सवेंदना तथा मानवता का त्याग कर देते है । वे नहीं जानते की उनका दिव्यांग लोगो के लिए दायित्व्य होता है । अतः लेखक ने गूंगे बोलकर समाज में व्याप्त ऐसे लोगों की ओर संकेत किया है ।

11:4:1: प्रश्न-अभ्यास:9

9. **यदि 'स्किल इंडिया' जैसा कोई कार्यक्रम होता तो क्या गूंगे को दया या सहानभूति का पात्र बनना पड़ता?**

उत्तर- यदि ‘स्किल इंडिया‘ जैसा कोई कार्यक्रम होता तो किसी भी गूंगे या हम कह सकते हैं किसी भी विकलांग को सहानुभूति का पात्र नहीं बनना पड़ेगा ।समाज में विकलांग के लिए अनेक प्रकार के सहयोग हो सकते हैं । उनके उत्थान के लिए नौकरी में

आरक्षण ,विद्यालय ,कॉलेज तथा बसों में आरक्षण की व्यवस्था भी की जा सकती है । उनका मज़ाक न उड़ाया जाए उनके साथ बुरा व्यवहार न किया जाए । न ही उनके स्वाभिमान पर चोट पहुंचे और न ही उन्हें किसी की सहानुभूति की जरूरत पड़े । उन्हें सामान्य नागरिक की तरह जीने दिया जाए । स्किल इण्डिया होने से किसी भी विकलांग को सम्मान का जीवन मिल पायेगा ।